हृदयेश

मन बहुत है

आज तपती रेत पर कुछ छंद
लहरों के लिखें हम
समय के अतिरेक को
हम साथ लें अपने स्वरों में
मन बहुत है

कस रहे गुजलक से
ये सुबह के पल बहुत भारी
अनय को देता समर्थन
दिवस यह गेरुआधारी
चिमनियों से निकल सोनल धूप
उतरी प्यालियों में
जिंदगी की खोज होने
है लगी कहवाघरों में

चलो, फिर इन घाटियों को
जुगनुओं से हम सजा दें
मोरपंखों–सा सुबह को
खोंस ले अपने परों में
मन बहुत है!

विकट आई घड़ी यह
जिसमें लुभावन फंद केवल
भेदिये–सी छांह सुख की
घरों भीतर कर रही छल
जिधर भी लरजे घटा
उस ओर ही आकाश तारे
लपलपाती चल रही रुत
आग लेकर खप्परों में

खौलती नदियां जहां भी
चलो, उसकी थाह पायें
और उसके वेग को हम
थाम लें अपने करों में
मन बहुत है।

('नये–पुराने' गीत अंक–3, सितम्बर–1998 से साभार)

खेल–सियासत

यह कैसी शतरंज बिछी है,
जिसपर खड़े पियादे–से हम
खेल–खेल में पिट जाते हैं,
कितने सीधे–सादे–से हम

बिना मोल मोहरे बनें हम
खड़े हुए हैं यहां भीड़ में
ऐसी क्या है मजबूरी जो
बंधे प्राण राजा–वजीर में
फलक विहीन किसी तुक्के–सा चलते हैं,
जिस–तिस के हाथों
राजा के हाथी–घोड़ों से कुछ थोड़े,
कुछ ज्यादे–से हम

हम कैसे सर्कस के बौने
डेग–डेग में दुनिया नापें
सबके आगे चलते जायें
उठते–गिरते कभी न कांपे
अपना सब कुछ लगा दांव पर
राजा की शह–मात बचायें
खेल–सियासत की हर बाजी
अपने कंधों लादे–से हम

यहां खेल के कुछ उसूल हैं
बने हुए कुछ चौखट–खाने
हुक्म हमें हैं चढ़े दांव पर
मर–कट जायें इसी बहाने
कौन खिलाड़ी, कौन अनाड़ी,
हमको इससे मतलब ही क्या
राजा की मायानगरी में
झूठे कसमें–वादे–से हम।

सम्पर्क–
ग्रामीण जलापूर्ति केन्द्र,
दिग्घीकला, हाजीपुर, वैशाली
(बिहार)